आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर द्वारा ग्राम हरिनगर में वर्मी कम्पोस्टिंग पर एक दिवसीय ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR-IVRI), मुक्तेश्वर के प्रसार शिक्षा अनुभाग द्वारा दिनांक 08-10-2026 को ग्राम हरिनगर में किसानों के लिए वर्मी कम्पोस्टिंग पर एक दिवसीय ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के कार्यवाहक संयुक्त निदेशक डॉ. शेर सिंह के मार्गदर्शन में वर्मी कम्पोस्टिंग एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. मनीष तोमर द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को वर्मी कम्पोस्टिंग की वैज्ञानिक तकनीक से अवगत कराना, कृषि एवं घरेलू जैविक अपशिष्ट का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना तथा वर्मी कम्पोस्ट के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य सुधार एवं जैविक खेती को बढ़ावा देना था। किसानों को कम लागत वाली एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ. मनीष तोमर ने किसानों को वर्मी कम्पोस्ट के महत्व, इसके उपयोग से होने वाले लाभ तथा कृषि में इसके प्रभावी प्रयोग के संबंध में विस्तृत वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि वर्मी कम्पोस्ट एक गुणवत्तायुक्त जैविक खाद है, जो मृदा की उर्वरता एवं संरचना में सुधार करने के साथ-साथ मृदा में जैविक पदार्थ एवं लाभकारी सूक्ष्मजीवों की उपलब्धता बढ़ाने में सहायक होती है। इसके नियमित एवं वैज्ञानिक उपयोग से रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करने तथा टिकाऊ एवं जैविक कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है। इसी क्रम में डॉ. करम चंद ने किसानों को दुधारू पशुओं के वैज्ञानिक प्रबंधन एवं देखभाल के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने दुधारू पशुओं के संतुलित आहार, उचित पोषण, नियमित स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छ आवास, समय पर टीकाकरण तथा रोगों से बचाव के आवश्यक उपायों के बारे में किसानों को अवगत कराया। उन्होंने विशेष रूप से अधिक दुग्ध उत्पादन एवं पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य के लिए वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को अपनाने पर जोर दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान किसानों ने पशुपालन एवं पशु स्वास्थ्य से संबंधित विषयों में भी विशेष रुचि दिखाई। किसानों ने विशेष रूप से गाय एवं बकरियों में होने वाले प्रमुख रोगों, उनके लक्षणों तथा रोगों से बचाव के लिए आवश्यक टीकाकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त करने में रुचि दिखाई। किसानों की जिज्ञासा को देखते हुए डॉ. करम चंद ने पशु स्वास्थ्य एवं रोग प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने गाय एवं बकरियों में प्रमुख संक्रामक

रोगों से बचाव, समय पर टीकाकरण, पशुओं की नियमित स्वास्थ्य निगरानी तथा स्वच्छ एवं सुरक्षित पशु आवास के महत्व के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम के दौरान किसानों के बीच वर्मी कम्पोस्टिंग एवं जैविक खेती से संबंधित तकनीकी साहित्य भी वितरित किया गया। साहित्य के माध्यम से किसानों को वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने की वैज्ञानिक विधि, इसके लाभ तथा कृषि में इसके उपयोग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई।

इस अवसर पर किसानों को संस्थान में विकसित एवं संचालित वर्मी कम्पोस्ट इकाई का भ्रमण कराने के लिए भी आमंत्रित किया गया। किसानों को बताया गया कि वे भविष्य में ICAR-IVRI, मुक्तेश्वर परिसर का भ्रमण कर संस्थान में संचालित वर्मी कम्पोस्ट इकाई को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं तथा वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन की व्यावहारिक प्रक्रिया को समझ सकते हैं। इससे किसानों को अपने गांव एवं खेतों में वर्मी कम्पोस्ट इकाई स्थापित करने में और अधिक सहायता मिलेगी।

यह एक दिवसीय ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों में जैविक अपशिष्ट प्रबंधन, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, मृदा स्वास्थ्य सुधार तथा पशु स्वास्थ्य एवं वैज्ञानिक पशुपालन के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्ट ने प्रसार शिक्षा अनुभाग एवं संबंधित टीम के प्रयासों की सराहना की तथा ग्रामीण क्षेत्रों में वैज्ञानिक एवं टिकाऊ कृषि एवं पशुपालन तकनीकों के प्रसार को निरंतर बढ़ावा देने पर बल दिया।